Shreemad Bhagawad Geeta: श्रीमद् - भगवद् - गीता

अथ गुणत्रयविभागयोगो नाम चतुर्दशोऽध्यायः॥

श्री भगवान् उवाच ।

परम् भूयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानाम् ज्ञानम् उत्तमम् ।

यत् ज्ञात्वा मुनयः सर्वे पराम् सिद्धिम् इतः गताः ॥ १४ - १ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
श्री भगवान् उवाच	Shree Bhagavaan Uvaacha	The Blessed Lord said	श्री भगवान् बोले	श्री भगवान म्हणाले
परम्	Param	supreme	परम	श्रेष्ठ
भूयः	BhuuyaH	again	फिर	पुनः
प्रवक्ष्यामि	Pravakshyaami	(I) will declare	कहूँगा	मी सांगेन
ज्ञानानाम्	Dnyaanaanaam	of all knowledges	ज्ञानों में भी	ज्ञानांमध्ये
ज्ञानम्	Dnyaanam	knowledge	ज्ञान को (मैं)	ज्ञान
उत्तमम्	Uttamam	the best	अति उत्तम उस	उत्तम
यत्	Yat	which	जिसको	जे
ज्ञात्वा	Dnyaatvaa	having known	जानकर	जाणल्यावर
मुनयः	MunayaH	the sages	मुनिजन	मुनिजनांनी
सर्वे	Sarve	all	सब	सर्व
पराम्	Paraam	(to the) ultimate / supreme	परम	श्रेष्ठ
सिद्धिम्	Siddhim	to perfection	सिद्धि को	सिद्धी
इतः	ItaH	from (after this life in the mortal world)	इस संसार से (मुक्त होकर)	यातून (संसारातून)
गताः	GataaH	gone	प्राप्त हो गये हैं	प्राप्त करून घेतलेली आहे

अन्वय : - श्री भगवान् उवाच - यत् ज्ञात्वा सर्वे मुनयः इतः पराम् सिद्धिम् गताः, (तत्) ज्ञानानाम् उत्तमम् परम् ज्ञानम् भूयः (अहम् ते) प्रवक्ष्यामि ॥ १४ - १ ॥

English translation: -

The Blessed Lord said, "I will again declare the supreme knowledge, the best of knowledges by knowing which, all the sages have passed from this world to the Supreme perfection."

हिन्दी अनुवाद :-

श्री भगवान् बोले, " समस्त ज्ञानों में उत्तम, उस परम श्रेष्ठ ज्ञान को, मैं फिर से दोहराऊंगा; जिसे जानकर सब मुनिजनों ने, इस संसार से मुक्त होकर, परम सिद्धि प्राप्त की है।"

मराठी भाषान्तर :-

श्री भगवान म्हणाले, " सर्व ज्ञानातील उत्तम व परम ज्ञान मी तुला पुन्हा सांगतो. हे ज्ञान जाणून, सर्व मुनी संसारबंधनातून मुक्त होऊन, सर्वोत्तम गतीला प्राप्त झाले आहेत."

विनोबांची गीताई :-

श्री भगवान् म्हणाले

सर्व ज्ञानांमधें थोर ज्ञान तें सांगतों पुन्हां।

ज्ञें ज्ञाणूनि इथें मोक्ष पावले सगळे मुनि ॥ १४ - १ ॥

इदम् ज्ञानम् उपाश्रित्य मम साधर्म्यम् आगताः ।

सर्गे अपि न उपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च ॥ १४ - २ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
इदम्	Idam	this	इस	या
ज्ञानम्	Dnyaanam	knowledge	ज्ञान को	ज्ञान
उपाश्रित्य	Upaashritya	having taken refuge in	आश्रय कर अर्थात् धारण कर	आश्रय करून
मम	Mama	My	मेरे	माझ्या
साधर्म्यम्	Saadharmyam	unity	स्वरूप को	स्वरूपाप्रत
आगताः	AagataaH	having attained to	प्राप्त हुए पुरुष	प्राप्त झालेले (पुरुष)
सर्गे	Sarge	at the time of creation	सृष्टि के आदि में	सृष्टीच्या आरंभी
अपि	Api	also	भी	सुद्धा
न	Na	not	नहीं	नाहीत
उपजायन्ते	Upajaayate	are born	(पुनः) उत्पन्न होते	उत्पन्न होतात
प्रलये	Pralaye	at the time of dissolution	प्रलय काल में	प्रलयकाळी
न	Na	not	नहीं	नाही
व्यथन्ति	Vyathanti	(they) are disturbed	व्याकुल होते	व्याकुळ होतात
च	Cha	and	और	आणि

अन्वय :- (ये) इदम् ज्ञानम् उपाश्रित्य मम साधर्म्यम् आगताः, (ते) सर्गे अपि न उपजायन्ते, प्रलये च न व्यथन्ति ॥ १४ - २ ॥

English translation:-

Having taken refuge in this knowledge and attained unity with Me, they are neither born at the time of creation nor are they disturbed at the time of dissolution.

हिन्दी अनुवाद :-

इस ज्ञान का आश्रय लेकर, मेरे स्वरूप को प्राप्त हुए पुरुष, सृष्टि के आदि में पुनर्जन्म नहीं लेते तथा प्रलयकाल में भी व्याकुल नहीं होते।

मराठी भाषान्तर :-

या ज्ञानाच्या आश्रयाने माझ्या स्वरूपाला प्राप्त झालेले लोक सृष्टीच्या निर्मितीच्या वेळी उत्पन्न होत नाहीत व प्रलयकाळी दुःखी होत नाहीत.

विनोबांची गीताई :-

ह्या ज्ञानाच्या बळानें ते झाले माझ्या चि सारखे।
जगें येवोत ज़ावोत ते अभंग ज़से तसे ॥ १४ - २ ॥

मम योनिः महत् ब्रह्म तस्मिन् गर्भम् दधामि अहम् ।

संभवः सर्वभूतानाम् ततः भवति भारत ॥ १४ - ३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
मम	Mama	My	मेरी	माझी
योनिः	YoniH	womb	सम्पूर्ण भूतों की योनि है अर्थात् गर्भाधान का स्थान है (और)	गर्भधानाचे स्थान
महत्	Mahat	great	महान	महान
ब्रह्म	Brahma	Brahma	ब्रह्मरूप मूल प्रकृति	ब्रह्म (मूळ प्रकृती)
तस्मिन्	Tasmin	in that	उन योनि में	त्या मध्ये
गर्भम्	Garbham	seed	चेतन समुदायरूप गर्भ को	बीज
दधामि	Dadhaami	place	स्थापन करता हूँ	स्थापन करतो
अहम्	Aham	I	मैं	मी
संभवः	SaMbhavaH	birth	उत्पत्ति	उत्पत्ती
सर्वभूतानाम्	Sarva-Bhuutaanaam	of all beings	सब भूतों की	सर्व प्राणिमात्रांची
ततः	TataH	thence	जड़ चेतन के संयोग से	त्या (जड - चेतनाच्या संयोगाने)
भवति	Bhavati	is	होती है	होते
भारत	Bhaarata	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !

अन्वय :- हे भारत ! महत् ब्रह्म मम योनिः (अस्ति) तस्मिन् अहम् गर्भम् दधामि ; ततः सर्वभूतानाम् संभवः भवति ॥ १४ - ३ ॥

English translation:-

My womb is the Maha Brahma (Prakriti i.e. matter at large), in that I place the seed; thence arises birth of all beings, O Arjuna.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! मेरी महान् ब्रह्मरूप प्रकृति , सभी प्राणियों की योनि है ; जिसमें मैं चेतनारूप बीज डालकर , जड़ और चेतन के संयोग से , समस्त भूतों की उत्पत्ति करता हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! महद् - ब्रह्म म्हणजे प्रकृती माझी योनी (गर्भधानस्थान) आहे ; तेथे मी (परमेश्वर) गर्भ म्हणजे बीजाची स्थापना करतो , त्यापासून सर्व प्राणिमात्रांची उत्पत्ती होते .

विनोबांची गीताई :-

माझें प्रकृति हें क्षेत्र मी बीज पेरितों ।
त्यांतूनि सर्व भूतांची उत्पत्ति मग होतसे ॥ १४ - ३ ॥

सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तयः संभवन्ति याः ।

तासाम् ब्रह्म महत् योनिः अहम् बीजप्रदः पिता ॥ १४ - ४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सर्वयोनिषु	SarvayoniShu	in all the wombs	नाना प्रकार की सब योनियों में	सर्व योनींमध्ये
कौन्तेय	Kaunteya	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
मूर्तयः	MurrtayaH	forms	मूर्तियाँ अर्थात् शरीरधारी प्राणी	मूर्ती (शरीरधारी प्राणिमात्र)
संभवन्ति	SaMbhavanti	are produced	उत्पन्न होते हैं	उत्पन्न होतात
याः	YaaH	which	जितनी	जितक्या
तासाम्	Taasaam	their	उन सबकी	त्या सर्वांची
ब्रह्म	Brahma	Brahma	प्रकृति (तो)	ब्रह्म (मूळ प्रकृती)
महत्	Mahat	great	महान	महान
योनिः	YoniH	womb	गर्भ धारण करनेवाली माता है (और)	योनी
अहम्	Aham	I	मैं	मी
बीजप्रदः	BeejapradaH	seed-giving	बीज को स्थापन करनेवाला	बीज स्थापन करणारा
पिता	Pitaa	father	पिता हूँ	पिता (आहे)

अन्वय :- हे कौन्तेय ! सर्वयोनिषु याः मूर्तयः संभवन्ति तासाम् योनिः महत् ब्रह्म (अस्ति) , अहम् बीजप्रदः पिता (च अस्मि) ॥ १४ - ४ ॥

English translation:-

Whatever forms (of beings) are produced in all wombs, O Arjuna, the great Brahma (Prakriti i.e. the matter at large) is their womb (mother), while I am the seed-giving father to all beings.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! सभी योनियों में , जितने भी शरीरधारी प्राणी पैदा होते हैं ; उन सब प्राणियों की , प्रकृति तथा सृष्टी माता है और मैं चेतनारूप बीज प्रदान करनेवाला सृष्टा तथा पिता हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

हे कुंतीपुत्रा अर्जुना ! सर्व योनींमध्ये जी शरीरे उत्पन्न होतात त्या सर्वांचे उत्पत्तिस्थान प्रकृती आहे आणि बीज देणारा पिता मी आहे .

विनोबांची गीताई :-

सर्व योनींमधें मूर्ति जितुक्या जन्म पावती ।
माता प्रकृति ही त्यांस पिता मी बीज पेरिता ॥ १४ - ४ ॥

सत्त्वम् रजः तमः इति गुणाः प्रकृति संभवाः ।

निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनम् अव्ययम् ॥ १४ - ५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सत्त्वम्	Sattvam	Sattva	सत्त्वगुण	सत्त्वगुण
रजः	RajaH	Rajas	रजोगुण	रजोगुण
तमः	TamaH	Tamas	और तमोगुण	तमोगुण
इति	Iti	these	ये	हे
गुणाः	GuNaaH	qualities	तीनों गुण	तीनही गुण
प्रकृति	Prakruti	matter	प्रकृतिसे	प्रकृती
संभवाः	SaMbhavaaH	born of	उत्पन्न	उत्पन्न होणारे
निबध्नन्ति	Nibadhnanti	(they) bind	बाँधते हैं	बांधून टाकतात
महाबाहो	Mahaabaaho	O mighty armed!	हे अर्जुन !	हे पराक्रमी अर्जुना !
देहे	Dehe	in body	शरीरमें	शरीरात
देहिनम्	Dehinam	embodied	जीवात्माको	जीवात्म्याला
अव्ययम्	Avyayam	indestructible	अविनाशी	अविनाशी

अन्वय :- हे महाबाहो ! सत्त्वम् , रजः , तमः इति गुणाः प्रकृति - संभवाः (सन्ति) ; (ते) देहे देहिनम् अव्ययम् निबध्नन्ति ॥ १४ - ५ ॥

English translation:-

Sattva, Rajas and Tamas – these qualities born of matter bind the indestructible embodied to the body.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! प्रकृति से उत्पन्न - सत्त्व , रजस् और तमस् इन तीनों गुणों से बनी रस्सी - अविनाशी तत्त्व को याने जीवात्मा को , विनाशी देह के साथ बाँध देती है ।

मराठी भाषान्तर :-

हे पराक्रमी अर्जुना ! सत्त्व , रज आणि तम असे हे प्रकृतीपासून उत्पन्न झालेले तीन गुण अविनाशी आत्म्याला शरीरामध्ये बद्ध करतात .

विनोबांची गीताई :-

प्रकृतीपासुनी होती गुण सत्त्व - रजस् - तम ।
ते निर्विकार आत्म्यास ज़णूं देहांत ज़ुंपिती ॥ १४ - ५ ॥

तत्र सत्त्वम् निर्मलत्वात् प्रकाशकम् अनामयम् ।

सुखसङ्गेन बध्नाति ज्ञानसङ्गेन च अनघ ॥ १४ - ६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
तत्र	Tatra	there (of these)	उन तीनों गुणों में	त्या तीन्ही गुणांपैकी
सत्त्वम्	Sattvam	Sattva	सत्त्वगुण (तो)	सत्त्वगुण
निर्मलत्वात्	Nirmalatvaat	from its stainless-ness	निर्मल होनेके कारण	शुद्ध असल्यामुळे
प्रकाशकम्	Prakaashakam	luminous	प्रकाश करनेवाला	प्रकाशित
अनामयम्	Anaamayam	healthy	और विकाररहित है	विकाररहित
सुखसङ्गेन	Sukha-Sangena	by attachment to happiness	वह सुख के सम्बन्ध से	सुखाच्या आसक्तीने
बध्नाति	Badhnaati	binds	बाँधता है	बद्ध करतो
ज्ञानसङ्गेन	Dnyaana-Sangena	by attachment to knowledge	ज्ञान के सम्बन्ध से अर्थात् उसके अभिमान से	ज्ञानाच्या आसक्तीने
च	Cha	and	और	आणि
अनघ	Anagha	O sinless one!	हे निष्पाप अर्जुन !	हे निष्पाप अर्जुना !

अन्वय :- हे अनघ ! तत्र अनामयम् प्रकाशकम् सत्त्वम् निर्मलत्वात् (आत्मानम्) सुखसङ्गेन ज्ञानसङ्गेन च बध्नाति ॥ १४ - ६ ॥

English translation:-

Of these three Gunas; Sattva, being stainless, is luminous and healthy. It binds, O sinless one, by creating attachments to happiness and knowledge.

हिन्दी अनुवाद :-

हे पापरहित अर्जुन ! इन में सत्त्वगुण , निर्मल होने के कारण, विकाररहित और ज्ञान देनेवाला है । यह सत्त्वगुण , जीव को सुख और ज्ञान की आसक्ति से बाँधता है ।

मराठी भाषान्तर :-

हे निष्पाप अर्जुना ! या तीन गुणांमध्ये सत्त्व गुण हा प्रकाशमय व निर्दोष आहे . तो निर्मळ असल्यामुळे सुखाच्या व ज्ञानाच्या आसक्तीने जीवात्म्याला बांधून टाकतो .

विनोबांची गीताई :-

त्यांत निर्मळ तें सत्त्व ज्ञान आरोग्य वाढवी ।
मी सुखी आणि मी ज्ञानी शृंखला ही चि लेववी ॥ १४ - ६ ॥

रजः रागात्मकम् विद्धि तृष्णा सङ्ग समुद्भवम् ।

तत् निबध्नाति कौन्तेय कर्मसङ्गेन देहिनम् ॥ १४ - ७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
रजः	RajaH	Rajas	रजोगुण को	रजोगुण
रागात्मकम्	Raagaatmakam	of the nature of passion	तुम इस प्रीतिमय	प्रीतिरूप
विद्धि	Viddhi	know	यह जान लो	(तू) जाण
तृष्णा	TruShNaa	thirst	कामना	तहान (विषयकामना)
सङ्ग	Sanga	attachment	और आसक्ति से	आसक्ती
समुद्भवम्	Samudbhavam	the source of	उत्पन्न	निर्माण झालेला
तत्	Tat	that	वह रजोगुण	तो (रजोगुण)
निबध्नाति	Nibadhnaati	binds fast	बाँधता है	बद्ध करतो
कौन्तेय	Kaunteya	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
कर्मसङ्गेन	Karma-Sangena	by attachment to action	कर्मों के और उनके फल के संबन्ध से	कर्म व त्याचे फळ यांच्याद्वारे
देहिनम्	Dehinam	embodied	इस जीवात्माको	जीवात्म्याला

अन्वय :- हे कौन्तेय ! रागात्मकम् रजः, तृष्णा - सङ्ग - समुद्भवम् विद्धि। तत् देहिनम् कर्मसङ्गेन निबध्नाति ॥ १४ - ७ ॥

English translation:-

Know Rajas to be of the nature of passion, the source of thirst and attachment; O Arjuna, it binds fast the embodied by attachment to action.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! जिस से विषय - भोग की प्यास और आसक्ति उत्पन्न होती है, उस प्रीतिमय रजोगुण को, तुम ठीक तरह जान लो। वह रजोगुण, इस जीवात्मा को, कर्मों के और उनके फल के संबन्ध से बाँधता है।

मराठी भाषान्तर :-

हे कुंतीपुत्रा अर्जुना ! रजोगुण हा इच्छात्मक असून विषयतृष्णा व विषयासक्ती यांच्यापासून उत्पन्न होतो हे जाण. तो जीवात्म्याला कर्माच्या आसक्तीने बद्ध करतो.

विनोबांची गीताई :-

रज तें वासना रूप तृष्णा आसक्ति वाढवी।
आत्म्यास कर्म संगानें टाकितें ज़खडूनि तें ॥ १४ - ७ ॥

तमः तु अज्ञानजम् विद्धि मोहनम् सर्वदेहिनाम् ।

प्रमाद् आलस्य निद्राभिः तत् निबध्नाति भारत ॥ १४ - ८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
तमः	TamaH	Tamas	तमोगुण को	तमोगुण
तु	Tu	but	तो	तर
अज्ञानजम्	Adnyaanam	born of ignorance	अज्ञान से उत्पन्न	अज्ञानापासून उत्पन्न झालेला
विद्धि	Viddhi	know	जान लो	(तू) जाण
मोहनम्	Mohanam	deluder	मोहित करनेवाले	मोहित करणारा
सर्वदेहिनाम्	Sarva-Dehinaam	to all embodied beings	सब देहाभिमानियों को	सर्व देहधारी पुरुषांना
प्रमाद	Pramaada	heedlessness	इन्द्रियाँ और अन्तःकरण की व्यर्थ चेष्टाएँ	इंद्रिये व अंतःकरणाच्या अर्थशून्य क्रिया
आलस्य	Aalasya	indolence	कर्तव्यकर्म में अप्रवृत्तिरूप निरुद्यमता	आळस (कर्तव्य कर्माकडे दुर्लक्ष करून निरुद्योगीपणा)
निद्राभिः	NidraabhiH	sleep	और निद्रा के द्वारा	झोपेने
तत्	Tat	that	वह तमोगुण	तो (तमोगुण)
निबध्नाति	Nibadhnaati	binds fast	बाँधता है	(या जीवात्म्याला) बद्ध करतो
भारत	Bhaarata	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !

अन्वय :- हे भारत ! तमः तु सर्वदेहिनाम् मोहनम् अज्ञानजम् विद्धि । तत् (देहिनम्) प्रमाद - आलस्य - निद्राभिः निबध्नाति ॥ १४ - ८ ॥

English translation:-

But know Tamas to be born of ignorance, deluder of all embodied beings; it binds fast, O Arjuna, by heedlessness, indolence and sleep.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! सब देहाभिमानियों को , मोहित करनेवाले तमोगुण को , तो अज्ञान से उत्पन्न हुआ जान लो । वह तमोगुण , इस जीवात्मा को - इन्द्रियाँ और अन्तःकरण की व्यर्थ चेष्टाएँ , कर्तव्यकर्म में अप्रवृत्तिरूप निरुद्यमता और निद्रा के द्वारा ; बाँधता है ।

मराठी भाषान्तर :-

हे भारता ! तमोगुण हा अज्ञानापासून उत्पन्न होणारा आहे . तो सर्व जीवांना मोहात पाडणारा आहे . तो प्रमाद (अयोग्य वागणे) , आळस व निद्रा यांच्या योगाने जीवात्म्याला बद्ध करतो .

विनोबांची गीताई :-

गुंगवी तम सर्वांस अज्ञान चि विरूढलें ।
झोंप आळस दुर्लक्ष ह्यांनीं घेरूनि बांधितें ॥ १४ - ८ ॥

सत्त्वम् सुखे संजयति रजः कर्मणि भारत ।

ज्ञानम् आवृत्य तु तमः प्रमादे संजयति उत ॥ १४ - ९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सत्त्वम्	Sattvam	Sattva	सत्त्वगुण	सत्त्वगुण
सुखे	Sukhe	in happiness	सुख में	सुखामध्ये
संजयति	SaMjayati	attaches / binds	लगाता है	आसक्त करतो
रजः	RajaH	Rajas	और रजोगुण	रजोगुण
कर्मणि	KarmaNi	in action	कर्म में तथा	कर्मामध्ये
भारत	Bhaarata	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
ज्ञानम्	Dnyaanam	knowledge	ज्ञान को	ज्ञानाला
आवृत्य	Aavrutya	having veiled / shrouded	ढककर	झाकून
तु	Tu	verily / indeed	तो	तसेच
तमः	TamaH	Tamas	तमोगुण	तमोगुण
प्रमादे	Pramaade	in heedless-less	प्रमाद में	प्रमादामध्ये सुद्धा
संजयति	SaMjayati	attaches / binds	लगाता है	आसक्त करतो
उत	Uta	while	भी	तर

अन्वय :- हे भारत ! सत्त्वम् (देहिनम्) सुखे संजयति , रजः कर्मणि उत तमः तु ज्ञानम् आवृत्य प्रमादे संजयति ॥ १४ - ९ ॥

English translation:-

Sattva attaches one to happiness and Rajas attaches one to action, O Arjuna. While Tamas verily veils knowledge and attaches one to heedless-ness.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! सत्त्वगुण सुख में लगाता है और रजोगुण कर्म में आसक्त करवाता है तथा तमोगुण तो ज्ञान को ढककर , इन्द्रियाँ और अन्तःकरणकी व्यर्थ चेष्टाओं में , भी लगाकर जीव को लापरवाह बना देता है ।

मराठी भाषान्तर :-

सत्त्वगुण हा सुखास प्रवृत्त करतो , रजोगुण कर्मास प्रवृत्त करतो तर तमोगुण ज्ञानाला झाकून प्रमादास प्रवृत्त करतो .

विनोबांची गीताई :-

सुखांत घालितें सत्त्व रज कर्मांत घालितें ।
ज्ञान झांकूनि संपूर्ण दुर्लक्षीं घालितें तम ॥ १४ - ९ ॥

रजः तमः च अभिभूय सत्त्वम् भवति भारत ।

रजः सत्त्वम् तमः च एव तमः सत्त्वम् रजः तथा ॥ १४ - १० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
रजः	RajaH	Rajas	रजोगुण	रजोगुण
तमः	TamaH	Tamas	तमोगुण को	तमोगुण
च	Cha	and	और	आणि
अभिभूय	Abhibhuuya	having predominated	दबाकर	(यांना) दडपून
सत्त्वम्	Sattvam	Sattva	सत्त्वगुण	सत्त्वगुण
भवति	Bhavati	arises / becomes	होता है अर्थात् बढता है	वाढतो
भारत	Bhaarata	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
रजः	RajaH	Rajas	रजोगुण	रजोगुण
सत्त्वम्	Sattvam	Sattva	सत्त्वगुण	सत्त्वगुण
तमः	TamaH	Tamas	तमोगुण (को दबाकर)	तमोगुण
च	Cha	and	और	आणि
एव	Eva	even	ही	तशाचप्रकारे
तमः	TamaH	Tamas	तमोगुण	तमोगुण
सत्त्वम्	Sattvam	Sattva	सत्त्वगुण	सत्त्वगुण
रजः	RajaH	Rajas	रजोगुण (को दबाकर)	रजोगुण
तथा	Tathaa	likewise	वैसे	तसेच

अन्वय :- हे भारत ! सत्त्वम् , रजः तमः च अभिभूय (स्वयम्) भवति ; रजः , सत्त्वम् तमः च (अभिभूय स्वयम् भवति) ; तथा तमः , सत्त्वम् रजः च एव (अभिभूय स्वयम् भवति) ॥ १४ - १० ॥

English translation:-

Sattva asserts itself, O Arjuna, by predominating over Rajas and Tamas; Rajas over Sattva and Tamas, even so Tamas over Sattva and Rajas.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! रजोगुण और तमोगुण को दबाकर सत्त्वगुण , सत्त्वगुण और तमोगुण को दबाकर रजोगुण ; वैसे ही सत्त्वगुण और रजोगुण को दबाकर तमोगुण होता है अर्थात् बढता है ।

मराठी भाषान्तर :-

सत्त्वगुण हा रजोगुण व तमोगुण यांना पराभूत करुन प्रगट होतो . रजोगुण हा सत्त्वगुण व तमोगुण यांना दाबून वाढतो , तर तमोगुण हा सत्त्वगुण व रजोगुण यांना जिंकून वाढतो .

विनोबांची गीताई :-

अन्य दोघांस जिंकूनि तिसरें करितें बळ ।
असें चढें कधीं सत्त्व कधीं रज कधीं तम ॥ १४ - १० ॥

सर्वद्वारेषु देहे अस्मिन प्रकाशः उपजायते ।

ज्ञानम् यदा तदा विद्यात् विवृद्धम् सत्त्वम् इति उत ॥ १४ - ११ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सर्वद्वारेषु	Sarva-DvaareShu	in all gates	तथा अन्तःकरण और इन्द्रियों में	सर्वद्वारात (अंतःकरण आणि इंद्रिये यांमध्ये)
देहे	Dehe	in body	देह में	देहामध्ये
अस्मिन	Asmina	in this	इस	या
प्रकाशः	PrakaashaH	(wisdom) light	चेतनता	चैतन्य
उपजायते	Upa-Jaayate	shines / stems forth	उत्पन्न होती है	उत्पन्न होते
ज्ञानम्	Dnyaanam	knowledge	और विवेकशक्ति	ज्ञान
यदा	Yadaa	when	जिस समय	ज्यावेळी
तदा	Tadaa	then	उस समय	त्यावेळी
विद्यात्	Vidyaat	(it) may be known	जानना चाहिये	जाणावे
विवृद्धम्	Vivruddham	(is) predominant	बढ़ा है	वाढला आहे
सत्त्वम्	Sattvam	Sattva	सत्त्वगुण	सत्त्वगुण
इति	Iti	thus	ऐसा	असे
उत	Uta	indeed	कि	की

अन्वय :- उत यदा अस्मिन देहे सर्वद्वारेषु प्रकाशः ज्ञानम् (च) उपजायते , तदा सत्त्वम् विवृद्धम् इति विद्यात् ॥ १४ - ११ ॥

English translation:-

When the light of knowledge shines through all the gateways of the body, then it may be known that Sattva indeed is predominant.

हिन्दी अनुवाद :-

जब ज्ञान का प्रकाश , इस देह के सभी द्वारों अर्थात् समस्त इन्द्रियों को , प्रकाशित करता है ; अर्थात् जब जीवात्मा के अन्तःकरण में , ज्ञान के प्रकाश का , उदय होता है तब सत्त्वगुण को बढ़ा हुआ जानना चाहिए ।

मराठी भाषान्तर :-

ज्यावेळी या देहात , सर्व द्वारात म्हणजे इंद्रियांत , प्रकाशरूपी ज्ञान उत्पन्न होते ; त्यावेळी सत्त्वगुण वाढला आहे असे समजावे .

विनोबांची गीताई :-

प्रज्ञेचा इंद्रिय द्वारा प्रकाश सगळीकडे ।
देहांत पसरे तेव्हां ज़ाणावें सत्त्व वाढलें ॥ १४ - ११ ॥

लोभः प्रवृत्तिः आरम्भः कर्मणाम् अशमः स्पृहा ।

रजसि एतानि जायन्ते विवृद्धे भरतर्षभ ॥ १४ - १२ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
लोभः	LobhaH	greed	लोभ	लोभ
प्रवृत्तिः	PravruttiH	activity	प्रवृत्ति स्वार्थबुद्धि से	प्रवृत्ती
आरम्भः	AarambhaH	the undertaking	आरम्भ	आरंभ
कर्मणाम्	KarmaNaam	of actions	कर्मों का सकाम भाव से	सकाम कर्मांचा
अशमः	AshamaH	unrest / restlessness	अशान्ति और	अशांती
स्पृहा	Spruhaa	longing	विषय भोगों की लालसा	लालसा (विषयभोगांची)
रजसि	Rajasi	in Rajas	रजोगुण के	रजोगुणात
एतानि	Etaani	these	ये सब	हे सर्व
जायन्ते	Jaayante	arise	उत्पन्न होते हैं	उत्पन्न होतात
विवृद्धे	Vivruddhe	having become predominant	बढ़नेपर	वाढला असताना
भरत - ऋषभ	Bharata - RhiShabha	O best (bull) among the Bharatas!	हे श्रेष्ठ भरतकुलोत्पन्न अर्जुन !	हे श्रेष्ठ भरतकुलोत्पन्ना अर्जुना !

अन्वय :- हे भरतर्षभ ! लोभः , प्रवृत्तिः , कर्मणाम् आरम्भः , अशमः , स्पृहा एतानि (चिह्नानि) रजसि विवृद्धे (सति) जायन्ते ॥ १४ - १२ ॥

English translation:-

Greed, activity, the undertaking of actions, unrest, longing – these arise, O best (bull) among the Bharatas, when Rajas is predominant.

हिन्दी अनुवाद :-

हे भरतश्रेष्ठ अर्जुन ! रजोगुण के बढ़ने पर लोभ , सक्रियता , सकाम कर्म , बेचैनी , लालसा आदि उत्पन्न होते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

हे भरतश्रेष्ठा अर्जुना ! रजोगुणाची वृद्धी झाली असता लोभ , कर्माची प्रवृत्ती , कर्माचा आरंभ , अशांती व इच्छा उत्पन्न होतात .

विनोबांची गीताई :-

प्रवृत्ति लालसा लोभ कर्मारंभ अशांतता ।
हीं देहीं उठती तेव्हां ज्ञाणावे रज वाढलें ॥ १४ - १२ ॥

अप्रकाशः अप्रवृत्तिः च प्रमादः मोहः एव च ।

तमसि एतानि जायन्ते विवृद्धे कुरुनन्दन ॥ १४ - १३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अप्रकाशः	AprakaashaH	darkness	अन्धेरा	अंधःकार
अप्रवृत्तिः	ApravruttiH	inertness	कर्तव्य कर्मों में अप्रवृत्ति	(कर्तव्य - कर्मांमध्ये) प्रवृत्तीचा अभाव
च	Cha	and	और	व
प्रमादः	PramaadaH	heedless-ness	प्रमाद अर्थात् व्यर्थ चेष्टा	प्रमाद (अंतःकरण व इंद्रिये यांच्या व्यर्थ क्रिया)
मोहः	MohaH	delusion	निद्रादि अन्तःकरण की मोहिनी वृत्तियाँ	मोहः (अंतःकरणाच्या निद्रा इत्यादी मोहकारक वृत्ती)
एव	Eva	also	ही	केवळ
च	Cha	and	और	आणि
तमसि	Tamasi	in Tamas	तमोगुण के	तमोगुणात
एतानि	Etaani	these	ये सब	हे (सर्वच)
जायन्ते	Jaayante	arise	उत्पन्न होते हैं	उत्पन्न होतात
विवृद्धे	Vivruddhe	have become predominant	अन्तःकरण और इन्द्रियों में बढ़ने पर	(अंतःकरण व इंद्रिये यांच्या ठायी) वाढला असता
कुरुनन्दन	Kurunandana	O descendant Kuru!	हे कुरुपुत्र अर्जुन !	हे अर्जुना !

अन्वय :- हे कुरुनन्दन ! अप्रकाशः , अप्रवृत्तिः च प्रमादः , च मोहः एव , एतानि (चिह्नानि) तमसि विवृद्धे (सति) जायन्ते ॥ १४ - १३ ॥

English translation:-

Indiscrimination (darkness), inertness, heedless-ness and delusion – these arise, O joy of the Kurus, when Tamas is predominant.

हिन्दी अनुवाद :-

हे कुरुनन्दन , तमोगुण के बढ़ने पर - अज्ञानस्वरूप अन्धेरा , निष्क्रियता , लापरवाही और मानसिक भ्रम इत्यादि अवगुण उत्पन्न होते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

हे कुरुवंशजा ! तमोगुण वाढला असता अविवेकरुपी अंधार , कर्म प्रवृत्तीचा अभाव , प्रमाद व मोह हे उत्पन्न होतात .

विनोबांची गीताई :-

अंधार मोह दुर्लक्ष अप्रवृत्ति चहूंकडे ।
देहांत माज़ली तेव्हां ज़ाणावें तम वाढलें ॥ १४ - १३ ॥

यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयम् याति देहभृत् ।

तदा उत्तमविदाम् लोकान् अमलान् प्रतिपद्यते ॥ १४ - १४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यदा	Yadaa	when	जब	जेव्हा
सत्त्वे	Sattve	in Sattva	सत्त्वगुण की	सत्त्वगुणात
प्रवृद्धे	Pravruddhe	having become predominant	वृद्धि में	वाढलेला असताना
तु	Tu	verily / indeed	तो	नक्कीच
प्रलयम्	Pralayam	death	मृत्यु को	मरणाप्रत
याति	Yaati	meets	प्राप्त होता है	जातो
देहभृत्	Dehabhrut	the embodied being	यह मनुष्य	देहधारी (मनुष्य)
तदा	Tadaa	then	तब	तेव्हा
उत्तमविदाम्	Uttama-Vidaam	of the knowers of the highest	उत्तम कर्म करनेवालों के	उत्तम कार्य करणाऱ्या विद्वानांच्या
लोकान्	Lokaan	to the worlds	लोकों को	लोकांत
अमलान्	Amalaan	of the spotless	निर्मल दिव्य स्वर्गादि	निर्मळ (दिव्य स्वर्गादी)
प्रतिपद्यते	Pratipadyate	(he) attains	प्राप्त होता है	मिळवितो

अन्वय :- यदा तु सत्त्वे प्रवृद्धे (सति) देहभृत् प्रलयम् याति तदा उत्तमविदाम् अमलान् लोकान् प्रतिपद्यते ॥ १४ - १४ ॥

English translation:-

If the embodied being meets with death, when Sattva is predominant, then he goes to the pure worlds of those who know the highest, the Supreme.

हिन्दी अनुवाद :-

जब यह मनुष्य , सत्त्वगुण की वृद्धि में , मृत्यु को प्राप्त होता है ; तब तो उत्तम कर्म करनेवालों के , निर्मल - दिव्य स्वर्गादि लोकों को प्राप्त होता है ।

मराठी भाषान्तर :-

परंतु सत्त्व गुणांची वाढ झाली असताना , देह धारण करणारा जीव जेव्हा मरतो ; तेव्हा तो विद्वान लोकांना प्राप्त होणाऱ्या , उत्तम प्रकाशमान लोकाला प्राप्त होतो .

विनोबांची गीताई :-

वाढलें असतां सत्त्व ज़ाय ज़ो देह सोडुनी ।

जन्मतो शुभ लोकांत तो ज्ञात्यांच्या समागमीं ॥ १४ - १४ ॥

रजसि प्रलयम् गत्वा कर्मसङ्गिषु जायते ।

तथा प्रलीनः तमसि मूढयोनिषु जायते ॥ १४ - १५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
रजसि	Rajasi	in Rajas	रजोगुण के बढ़नेपर	रजोगुणात
प्रलयम्	Pralayam	To death	मृत्यु को	मृत्यू
गत्वा	Gatvaa	having gone	प्राप्त होकर	प्राप्त झाल्यावर
कर्मसङ्गिषु	Karma-SangiShu	those attached to action	कर्मों की आसक्तिवाले मनुष्यों में	कर्मासक्ती असणाऱ्या मनुष्यांमध्ये
जायते	Jaayate	(he) is born	उत्पन्न होता है	जन्म पावतो
तथा	Tathaa	so also	तथा	तसेच
प्रलीनः	PraleenaH	dying	मरा हुआ मनुष्य	मेलेला मनुष्य
तमसि	Tamasi	in Tamas	तमोगुण के बढ़नेपर	तमोगुणात
मूढयोनिषु	MuuDha-YoniShu	in the wombs of the senseless	कीटक पशु इत्यादि मूढयोनियों में	कीटक पशू इत्यादी मूढ योनींमध्ये
जायते	Jaayate	(he) is born	उत्पन्न होता है	जन्म घेतो

अन्वय :- (देहभृत्) रजसि प्रलयम् गत्वा कर्मसङ्गिषु जायते । तथा (सः देहभृत्) तमसि प्रलीनः मूढयोनिषु जायते ॥ १४ - १५ ॥

English translation:-

Meeting with death in Rajas (in mind), he is born among those attached to action; so also dying in Tamas (in mind), he is born in the wombs of the senseless (deluded ones).

हिन्दी अनुवाद :-

रजोगुण के बढ़नेपर , मरा हुआ मनुष्य , कर्मों की आसक्तिवाले मनुष्यों में पुनर्जन्म लेता है ; तथा तमोगुण के बढ़नेपर , मरा हुआ मनुष्य , कीटक - पशु इत्यादि मूढयोनियों में पुनर्जन्म लेता है ।

मराठी भाषान्तर :-

रजोगुणाची वाढ झालेली असताना , मरण आले तर , कर्मासक्त मनुष्ययोनीत तो जन्म घेतो . तमोगुणाची वाढ झाली असताना , मरण आले तर , तो मूर्ख पशुयोनीत जन्म घेतो .

विनोबांची गीताई :-

रजांत लीन झाला तो कर्मासक्तांत जन्मतो ।

तमीं बुडूनि गेला तो मूढ - योनींत जन्मतो ॥ १४ - १५ ॥

कर्मणः सुकृतस्य आहुः सात्त्विकम् निर्मलम् फलम् ।

रजसः तु फलम् दुःखम् अज्ञानम् तमसः फलम् ॥ १४ - १६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
कर्मणः	KarmaNaH	of action	कर्म का तो	कर्माचे
सुकृतस्य	Sukrutasya	(of) good	श्रेष्ठ / अच्छे	सत्कर्म
आहुः	AahuH	(they) say	कहा है	सांगितले जाते
सात्त्विकम्	Saattvikam	Sattvika	सात्त्विक अर्थात् सुख ज्ञान और वैराग्य आदि	सात्त्विक
निर्मलम्	Nirmalam	pure	निर्मल	निर्मळ
फलम्	Phalam	fruit	फल	फळ
रजसः	RajasaH	of Rajas	राजस कर्म का	राजस कर्मांचे
तु	Tu	verily / indeed	किन्तु	परंतु
फलम्	Phalam	fruit	फल	फळ
दुःखम्	DuHkham	sorrow	दुःख	दुःख
अज्ञानम्	Adnyaanam	ignorance	अज्ञान कहा है	अज्ञान
तमसः	TamasaH	of Tamas	एवं तामस कर्म का	तामस कर्मांचे
फलम्	Phalam	fruit	फल	फळ

अन्वय :- सुकृतस्य कर्मणः सात्त्विकम् निर्मलम् फलम् , रजसः फलम् तु दुःखम् , तमसः (च) फलम् अज्ञानम् (इति) आहुः ॥ १४ - १६ ॥

English translation:-

The fruit of good action, they say, is Sattvika and pure; verily the fruit of Rajas is sorrow, while ignorance is the fruit of Tamas.

हिन्दी अनुवाद :-

अच्छे तथा सात्त्विक कर्म का फल , शुभ और निर्मल कहा गया है ; राजसिक कर्म का फल दुःख और तामसिक कर्म का फल अज्ञान कहा गया है ।

मराठी भाषान्तर :-

पुण्यकर्मांचे सात्त्विक व निर्मळ फळ मिळते . राजस कर्मांचे फळ दुःख आहे ; तर तामस कर्मांचे फळ अज्ञान आहे असे सांगितले आहे .

विनोबांची गीताई :-

फळ सात्त्विक कर्मांचें पुण्य निर्मळ बोलिलें ।

रजाचें फळ तें दुःख तमाचें ज्ञान शून्यता ॥ १४ - १६ ॥

सत्त्वात् संजायते ज्ञानम् रजसः लोभः एव च ।

प्रमाद् मोहौ तमसः भवतः अज्ञानम् एव च ॥ १४ - १७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सत्त्वात्	Sattvaat	from Sattva	सत्त्वगुण से	सत्त्वगुणापासून
संजायते	Sanjaayate	arises	उत्पन्न होता है	उत्पन्न होते
ज्ञानम्	Dnyaanam	knowledge	ज्ञान	ज्ञान
रजसः	RajasaH	from Rajas	रजोगुण से	रजोगुणापासून
लोभः	LobhaH	greed	लोभ	लोभ
एव	Eva	even	निःसंदेह	निःसंदेहपणे
च	Cha	and	और	आणि
प्रमाद्	Pramaada	heedless-ness	प्रमाद्	प्रमाद्
मोहौ	Mohau	delusion	और मोह	मोह
तमसः	TamasaH	from Tamas	तथा तमोगुण से	तमोगुणापासून
भवतः	BhavataH	arise	उत्पन्न होते हैं	उत्पन्न होतात
अज्ञानम्	Adnyaanam	ignorance	अज्ञान	अज्ञान
एव	Eva	even	भी होता है	सुद्धा (उत्पन्न होते)
च	Cha	and	और	आणि

अन्वय :- सत्त्वात् ज्ञानम् संजायते , रजसः लोभः एव च (संजायते) , तमसः प्रमादमोहौ भवतः , अज्ञानम् एव च (भवति) ॥ १४ - १७ ॥

English translation:-

From Sattva arises knowledge, from Rajas arises greed while from Tamas arises heedless-ness and delusion and also ignorance.

हिन्दी अनुवाद :-

सत्त्वगुण से ज्ञान और रजोगुण से निःसंदेह लोभ उत्पन्न होता है ; तथा तमोगुण से लापरवाही , मानसिक भ्रम उत्पन्न होते हैं और अज्ञान भी होता है ।

मराठी भाषान्तर :-

सत्त्वगुणापासून ज्ञान उत्पन्न होते . रजोगुणापासून लोभच उत्पन्न होतो . तमोगुणापासून प्रमाद , मोह आणि अज्ञानच उत्पन्न होते .

विनोबांची गीताई :-

सत्त्वांतूनि निघे ज्ञान निघे लोभ रजांतुनी ।
अज्ञान मोह दुर्लक्ष निघती हीं तमांतुनी ॥ १४ - १७ ॥

ऊर्ध्वम् गच्छन्ति सत्त्वस्थाः मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः ।

जघन्य गुणवृत्तिस्थाः अधः गच्छन्ति तामसाः ॥ १४ - १८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ऊर्ध्वम्	Urdhvam	upwards	स्वर्गादि उच्च लोकों को	वरती (स्वर्गादी उच्चलोकांमध्ये)
गच्छन्ति	Gachchhanti	(they) go	जाते हैं	जातात
सत्त्वस्थाः	SattvasthaaH	established in Sattva	सत्त्वगुण में स्थित पुरुष	सत्त्वगुणामध्ये स्थित असणारे (पुरुष)
मध्ये	Madhye	in the middle	मध्य में अर्थात् मनुष्य लोक में ही	मनुष्यलोकात
तिष्ठन्ति	TiShThanti	remain / dwell	रहते हैं	राहतात
राजसाः	RaajasaaH	the Rajasika	रजोगुण में स्थित राजस पुरुष	राजस पुरुष
जघन्य	Jaghanya	the lowest	और तमोगुण के कार्यरूप	निम्न श्रेणीचे
गुण-वृत्तिस्थाः	GuNa-VruttisthaaH	abiding in the qualities of	निद्रा प्रमाद और आलस्य आदि में स्थित	(निद्रा , प्रमाद व आळस) गुणात स्थित असणारे
अधः	AdhaH	downwards	अधोगति को तथा नरकों को	अधोगती (कीटक पशू इत्यादी नीच योनी तसेच नरक यांना)
गच्छन्ति	Gachchhanti	go	प्राप्त होते हैं	प्राप्त करून घेतात
तामसाः	TaamasaaH	the Tamasikas	तामस पुरुष	तामस पुरुष

अन्वय :- सत्त्वस्थाः ऊर्ध्वम् गच्छन्ति , राजसाः मध्ये तिष्ठन्ति , जघन्य - गुणवृत्तिस्थाः तामसाः अधः गच्छन्ति ॥ १४ - १८ ॥

English translation:-

Those established in the Sattva are go upwards, the Rajasika remain in the middle, while the Tamasikas, abiding in the activities of the lowest qualities go downwards.

हिन्दी अनुवाद :-

सत्त्वगुण में स्थित पुरुष , स्वर्गादि उच्च लोकों को जाते हैं । रजोगुण में स्थित राजस पुरुष , मध्य में अर्थात् मनुष्य लोक में ही रहते हैं । और तमोगुण के कार्यरूप - निद्रा , प्रमाद और आलस्य आदि में स्थित तामस पुरुष , अधोगति को अर्थात् कीटक पशु आदि नीच योनियों को तथा नरकों को प्राप्त होते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

सत्त्वगुणात स्थित असलेले सात्त्विकजन , वर म्हणजे स्वर्गलोकांत जातात . राजसगुणी लोक , मध्ये म्हणजे मनुष्यलोकात राहतात व निकृष्ट गुणात स्थित असलेले तामसी लोक , खाली म्हणजे अधोगतीला जातात .

विनोबांची गीताई :-

सत्त्व - स्थ चढती उंच मध्यें राजस राहती ।
हीन - वृत्तींत वागूनि जाती तामस खालती ॥

न अन्यम् गुणेभ्यः कर्तारम् यदा द्रष्टाः अनुपश्यति ।

गुणेभ्यः च परम् वेत्ति मद् भावम् सः अधिगच्छति ॥ १४ - १९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
न	Na	no	नहीं	नाही
अन्यम्	Anyam	other	अन्य किसी को	दुसरे
गुणेभ्यः	GuNebhyaH	than the qualities	तीनों गुणों के अतिरिक्त	तीन गुणांच्या पेक्षा
कर्तारम्	Kartaaram	agent / actor / performer	कर्ता	कर्ता
यदा	Yadaa	when	जिस समय	जेव्हा
द्रष्टाः	DraShTaaH	seer	समष्टि चेतन में एकीभाव से स्थित हुआ साक्षी पुरुष	साक्षी पुरुष
अनुपश्यति	Anupashyati	perceives	देखता	पाहतो
गुणेभ्यः	GuNebhyaH	than the qualities	तीनों गुणों से	तीन्ही गुणांच्या पलीकडे
च	Cha	and	और	आणि
परम्	Param	higher	अत्यन्त परे सच्चिदानन्द घनस्वरूप मुझ परमात्मा को	श्रेष्ठ
वेत्ति	Vetti	knows	तत्त्व से जानता है	(तत्वतः) जाणतो
मद्	Mad	My	मेरे	माझे
भावम्	Bhaavam	being	स्वरूप को	स्वरूप
सः	SaH	he	उस समय वह	तो
अधिगच्छति	Adhi-Gachchhati	attains	प्राप्त होता है	प्राप्त करून घेतो

अन्वय :- यदा द्रष्टाः गुणेभ्यः अन्यम् कर्तारम् न अनुपश्यति, गुणेभ्यः च परम् (आत्मानम्) वेत्ति, (तदा) सः मद्-भावम् अधिगच्छति ॥ १४-१९ ॥

English translation:-

When the seer perceives no agent other than the three Gunas (qualities) and recognises Him, who is higher than the three qualities (GuNateeta), he attains My being.

हिन्दी अनुवाद :-

जिस समय, समष्टि चेतन में एकीभाव से स्थित हुआ साक्षी पुरुष, तीनों गुणों के अतिरिक्त अन्य किसी को कर्ता नहीं देखता और तीनों गुणों से अत्यन्त परे, सच्चिदानन्द घनस्वरूप मुझ परमात्मा को, तत्त्व से जानता है; उस समय, वह मेरे स्वरूप को प्राप्त होता है अर्थात् जन्म-मृत्यु के चक्र से, मुक्ति पाता है।

मराठी भाषान्तर :-

ज्यावेळी ज्ञानी, तीन्ही गुणांखेरीज दुसरा कोणीही कर्ता नाही असे समजतो आणि तीन्ही गुणांच्या पलीकडे असलेले तत्त्व म्हणजे परमात्मा यथार्थपणे जाणतो; त्यावेळी तो माझ्या स्वरूपाला प्राप्त होतो.

विनोबांची गीताई :-

गुणांविण नसे कर्ता आत्मा तो त्यांपलीकडे।
देखणा ओळखे हें ज़ो होय माझें चि रूप तो ॥ १४-१९ ॥

गुणान् एतान् अतीत्य त्रीन् देही देहसमुद्भवान् ।

जन्म - मृत्यु - जरा - दुःखैः विमुक्तः अमृतम् अश्नुते ॥ १४ - २० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
गुणान्	GuNaan	qualities	गुणों को	गुणांना
एतान्	Etaan	these	इन	या
अतीत्य	Ateetya	having crossed over	उल्लङ्घन कर	उल्लंघन करून
त्रीन्	Treen	three	तीनों	तीन्ही
देही	Dehee	dweller in body / the embodied	पुरुष	देहधारी (पुरुष)
देहसमुद्भवान्	Deha-Samudbhavaan	out of which the body is evolved	शरीर की उत्पत्ति के कारणरूप	शरीरांच्या उत्पत्तीला कारणरूप असलेला
जन्म	Janma	birth	जन्म	जन्म
मृत्यु	Mrutyu	death	मृत्यु	मृत्यू
जरा	Jaraa	old age / decay of body	वृध्दावस्था	वृध्दावस्था
दुःखैः	DuHkhaiH	from pain	और सब प्रकार के दुःखोंसे	दुःखे
विमुक्तः	VimuktaH	completely freed	मुक्त हुआ	मुक्त झालेला
अमृतम्	Amrutam	immortality	परमानन्द को	मोक्ष (परमानंद)
अश्नुते	Ashnute	he attains / enjoys	प्राप्त होता है	प्राप्त करून घेतो

अन्वय :- देही एतान् देहसमुद्भवान् त्रीन् गुणान् अतीत्य , जन्म - मृत्यु - जरा - दुःखैः विमुक्तः (सन्) अमृतम् अश्नुते ॥ १४ - २० ॥

English translation:-

The embodied one, having crossed over these three qualities, out of which the body is evolved; is completely freed from birth, death, old age (decay) and pain and he ultimately attains immortality.

हिन्दी अनुवाद :-

पुरुष शरीर की उत्पत्ति के कारणरूप , इन तीनों गुणों को उल्लङ्घन कर - जन्म , मृत्यु , वृध्दावस्था और सब प्रकार के दुःखों से मुक्त हुआ , परमानन्द को प्राप्त होता है ।

मराठी भाषान्तर :-

देहधारी या देहाबरोबर उत्पन्न होणाऱ्या या तीन गुणांना उल्लंघून जातो म्हणजे पार करतो ; तो जन्म , मृत्यू , म्हातारपण व दुःखे यांपासून मुक्त होऊन मोक्ष भोगतो .

विनोबांची गीताई :-

देह कारण हे तीन गुण ज़ाय तरूनि ज़ो ।
जन्म - मृत्यु - जरा - दुःखीं सोडिला मोक्ष गांठतो ॥

अर्जुन उवाच ।

कैः लिङ्गैः त्रीन् गुणान् एतान् अतीतः भवति प्रभो ।

किम् आचारः कथम् एतान् त्रीन् गुणान् अतिवर्तते ॥ १४ - २१ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अर्जुन	Arjuna	Arjuna	अर्जुन ने	अर्जुन
उवाच	Uvaacha	asked	पूछा	विचारले
कैः	KaiH	by what	किन किन	कोणकोणत्या
लिङ्गैः	LingaiH	by marks	लक्षणों से युक्त	लक्षणांनी
त्रीन्	Treen	three	तीनों	तीन
गुणान्	GuNaan	qualities	गुणों से	गुणांच्या
एतान्	Etaan	these	इन	या
अतीतः	AteetaH	crossed over	अतीत पुरुष	पलीकडे गेलेला (पुरुष)
भवति	Bhavati	has	होता हैं	असतो
प्रभो	Prabho	O Blessed Lord!	हे प्रभो !	हे प्रभो !
किम्	Kim	what (is his)	किस प्रकार के	कोणत्या प्रकारचे
आचारः	AachaaraH	conduct	आचरणोंवाला होता है तथा	आचरण करणारा
कथम्	Katham	how	किस उपाय से मनुष्य	कोणत्या (उपायाने)
एतान्	Etaan	these	इन	या
त्रीन्	Treen	three	तीनों	तीन
गुणान्	GuNaan	qualities	गुणों से	गुणांच्या
अतिवर्तते	Ativartate	goes beyond	अतीत होता है	पलीकडे जातो

अन्वय :- अर्जुनः उवाच - हे प्रभो एतान् त्रीन् गुणान् अतीतः (जीवः) कैः लिङ्गैः (ज्ञातः) भवति ? (सः च) किम् आचारः ? (सः) एतान् त्रीन् गुणान् कथम् अतिवर्तते ॥ १४ - २१ ॥

English translation :- Arjuna said, "O Blessed Lord! What are the marks of him who has crossed over these three qualities? What is his conduct? And how does he rise above the three qualities?"

हिन्दी अनुवाद :-

अर्जुन ने पूछा , " हे प्रभो , इन तीनों गुणों से अतीत मनुष्य के क्या क्या लक्षण हैं ? उसका आचरण कैसा होता है ? और मनुष्य , इन तीनों गुणों से परे , कैसे हो सकता है ? "

मराठी भाषान्तर :-

अर्जुन म्हणाला , " हे प्रभो ! या तीन गुणांना उल्लंघून गेलेला पुरुष कोणत्या लक्षणांनी युक्त असतो ? त्याचे आचरण कसे असते ? आणि तो कोणत्या साधनाने या तीन गुणांना ओलांडतो ? "

विनोबांची गीताई :-

अर्जुन म्हणाला

त्रिगुणातीत जो देवा त्याचें लक्षण काय तें ॥ १४ - २१ ॥

वागणूक कशी त्याची कसा तो गुण निस्तरे ॥ १४ - २१ ॥

श्री भगवान् उवाच ।

प्रकाशम् च प्रवृत्तिम् च मोहम् एव च पाण्डव ।

न द्वेष्टि संप्रवृत्तानि न निवृत्तानि काङ्क्षति ॥ १४ - २२ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
श्री भगवान्	Shree Bhagavaan	The Blessed Lord	श्री भगवान् ने	श्री भगवान
उवाच	Uvaacha	said	कहा	म्हणाले
प्रकाशम्	Prakaasham	light	जो पुरुष सत्त्वगुण के कार्यरूप प्रकाश को	प्रकाश
च	Cha	and	और	आणि
प्रवृत्तिम्	Pravruttim	activity	रजोगुण के कार्यरूप प्रवृत्ति को	प्रवृत्ती (रजोगुणाचे कार्यरूप)
च	Cha	and	तथा	तसेच
मोहम्	Moham	delusion	तमोगुण के कार्यरूप मोह को	मोह (तमोगुणाचे कार्यरूप)
एव	Eva	even	भी	सुद्धा
च	Cha	and	और	आणि
पाण्डव	PaaNDava	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
न	Na	not	न तो	नाही
द्वेष्टि	DveShTi	hates	द्वेष करता है	द्वेष करतो
संप्रवृत्तानि	SaM-pravruttaani	(when) present / gone forth	प्रवृत्त होनेपर उनसे	प्रवृत्त झाल्यावर
न	Na	not	और न	नाही
निवृत्तानि	Nivruttaani	(when) absent	निवृत्त होनेपर उनकी	निवृत्त झाल्यावर
काङ्क्षति	KaaNkshati	longs	आकाङ्क्षा करता है	आकांक्षा करतो

अन्वय :- श्री भगवान् उवाच - हे पाण्डव ! प्रकाशम् च प्रवृत्तिम् च मोहम् एव च संप्रवृत्तानि न द्वेष्टि , निवृत्तानि (च) न काङ्क्षति ॥ १४ - २२ ॥

English translation:- The Blessed Lord said, "O Arjuna, he who neither hates light, activity and delusion when present, nor longs for them when absent."

हिन्दी अनुवाद :- श्री भगवान् ने कहा , " हे अर्जुन , जो पुरुष सत्त्वगुण के कार्यरूप ज्ञानरूपी प्रकाश को और रजोगुण के कार्यरूप सक्रियता को तथा तमोगुण के कार्यरूप मानसिक भ्रम को भी ; न तो प्रवृत्त होनेपर उनसे द्वेष करता है और न निवृत्त होनेपर उनकी आकाङ्क्षा करता है ।"

मराठी भाषान्तर :-

श्री भगवान म्हणाले, " हे पंडुपुत्रा अर्जुना ! प्रकाश (सत्त्व गुणाचे कार्य म्हणजे ज्ञान व सुख) , प्रवृत्ती (रजोगुणाचे कार्य म्हणजे लोभ दुःख वगैरे) व मोह (तमोगुणाचे कार्य म्हणजे अविवेक) ही प्राप्त झाली असता तो त्यांचा द्वेष करीत नाही व ती प्राप्त न झाली तरी त्यांची इच्छा करीत नाही असा तो गुणातीत असतो ."

विनोबांची गीताई :-

श्री भगवान् म्हणाले

प्रकाश मोह उद्योग गुण कार्यें निसर्गतां ।

पावतां न करी खेद न धरीं आस लोपतां ॥ १४ - २२ ॥

उदासीनवत् आसीनः गुणैः यः न विचाल्यते ।

गुणाः वर्तन्ते इति एव यः अवतिष्ठति न इङ्गते ॥ १४ - २३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
उदासीनवत्	Udaaseenavat	like one unconcerned	साक्षी के सदृश	उदासीनाप्रमाणे
आसीनः	AaseenaH	seated	स्थित हुआ	स्थित असणारा
गुणैः	GuNaiH	by the qualities	गुणों के द्वारा	गुणांकडून
यः	YaH	he who	जो	जो
न	Na	not	नहीं	नाही
विचाल्यते	Vichaalyate	is moved	विचलित किया जा सकता	विचलित केला जाऊ शकतो
गुणाः	GuNaaH	qualities	और गुण	गुण
वर्तन्ते	Vartante	function / operate	बरतते हैं	कार्य करतात
इति	Iti	thus	ऐसा समझता हुआ	असे
एव	Eva	only	ही (गुणों में)	केवळ
यः	YaH	he who	जो सच्चिदानन्दघन परमात्मा में एकी भाव से	जो (सच्चिदानंदघन परमात्म्यामध्ये एकनिष्ठेने)
अवतिष्ठति	AvatiShThati	is firm	स्थित रहता है	स्थित राहातो
न	Na	not	नहीं	नाही
इङ्गते	Ingate	moves	एवं उस स्थिति से कभी विचलित होता	विचलित होतो

अन्वय :- यः उदासीनवत् आसीनः गुणैः न विचाल्यते, यः च गुणाः वर्तन्ते इति (मत्वा) एव अवतिष्ठति (यः च) न इङ्गते ॥ १४ - २३ ॥

English translation:-

He who, seated like one unconcerned, is moved not by qualities (Gunas), who knowing that only the qualities (Gunas) operate; is firm and does not move a bit from his state.

हिन्दी अनुवाद :-

जो साक्षी के सदृश स्थित हुआ, गुणों के द्वारा विचलित नहीं किया जा सकता और गुण ही गुणों में बरतते हैं ऐसा समझता हुआ, जो सच्चिदानन्दघन परमात्मा में, एकी भाव से स्थित रहता है; एवं उस स्थिति से, कभी विचलित नहीं होता।

मराठी भाषान्तर :-

उदासीनाप्रमाणे असणारा, गुणांमुळे चंचल न होणारा, गुणच गुणांच्या विषयांमध्ये कार्य करीतात असे समजून स्थिर राहतो, तत्त्वापासून ढळत नाही; असा तो गुणातीत असतो.

विनोबांची गीताई :-

राहे ज़सा उदासीन गुणांनीं ज़ो न चाळवे।
त्यांचा चि खेळ ज़ाणूनि न डोले लेश मात्र हि ॥ १४ - २३ ॥

समदुःखसुखः स्वस्थः सम लोष्ट अश्म काञ्चनः ।

तुल्य प्रिय अप्रियः धीरः तुल्य निन्दा आत्म सम् स्तुतिः ॥ १४ - २४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
समदुःखसुखः	Sama – DuHkha - SukhaH	equanimous in pleasure and pain	सुख दुःख को समान समझनेवाला	सुख व दुःख यांना समान समजणारा
स्वस्थः	SvasthaH	anchored in his own Self	जो मनुष्य निरन्तर आत्मभाव में स्थित	शांत (निरंतर आत्मभावामध्ये स्थित)
सम	Sama	equal	में समान भाववाला	समान
लोष्ट	LoShTa	soil	मिट्टी	माती
अश्म	Ashma	stone	पत्थर	दगड
काञ्चनः	KaanchanaH	gold	और स्वर्ण	सोने
तुल्य	Tulya	alike / equal	एक सा माननेवाला	एकसारखे (मानणारा)
प्रिय	Priya	pleasant	प्रिय	प्रिय
अप्रियः	ApriyaH	unpleasant	तथा अप्रिय को	अप्रिय
धीरः	DheeraH	the wise	ज्ञानी	ज्ञानी
तुल्य	Tulya	alike / equal	एक सा माननेवाला	एकसारखे (मानणारा)
निन्दा	Nindaa	censure	निन्दा	निंदा
आत्म	Aatma	self	अपनी	स्वतःच्या
सम्	Sam	equal	समान भाववाला है	समान
स्तुतिः	StutiH	praise	और स्तुति में	स्तुती

अन्वय :- (यः) समदुःखसुखः , स्वस्थः , सम - लोष्ट - अश्म - काञ्चनः , तुल्य – प्रिय - अप्रियः , धीरः , तुल्य - निन्दा - आत्म - सम् - स्तुतिः ॥ १४ - २४ ॥

English translation:-

Equanimous in pleasure and pain, anchored in the Self, to whom soil, stone and gold are of equal value, to whom pleasant and unpleasant are alike, the wise, to him much censure and praise are of equal consideration.

हिन्दी अनुवाद :-

जो मनुष्य , निरन्तर आत्मभाव में स्थित , सुख - दुःख को समान समझनेवाला , मिट्टी - पत्थर और स्वर्ण में समान भाववाला , प्रिय तथा अप्रिय को एक सा माननेवाला और अपनी निन्दास्तुति में समान भाववाला है ; वह धीर पुरुष ज्ञानी है ।

मराठी भाषान्तर :-

सुखदुःख समान मानणारा , आत्मस्वरूपात स्थिर झालेला , मातीचे ढेकूळ , दगड व सोने यांना सारखे लेखणारा , प्रिय व अप्रिय समान मानणारा , निंदा वा स्तुती यांनी विचलित न होणारा ; असा तो धैर्यवान व स्थिर असतो .

विनोबांची गीताई :-

आत्मत्वें सम ज्ञो पाहे सोनें पाषाण मृत्तिका ।
धैर्यवंत सुखें दुःखें स्तुति निंदा प्रियाप्रिय ॥ १४ - २४ ॥

मान अपमानयोः तुल्यः तुल्यः मित्र अरि पक्षयोः ।

सर्व आरम्भ परित्यागी गुणातीतः सः उच्यते ॥ १४ - २५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
मान	Maana	honour	(जो पुरुष) मान	मान
अपमानयोः	ApamaanayoH	in dishonour	और अपमान में	अपमानात
तुल्यः	TulyaH	equal	समान है	समान
तुल्यः	TulyaH	equal	समान है	समान (असतो)
मित्र	Mitra	fried	मित्र	मित्र
अरि	Ari	foe	और वैरी के	शत्रू
पक्षयोः	PakshayoH	sides	पक्ष में	पक्षांच्या संदर्भात
सर्व	Sarva	all	एवं सम्पूर्ण	संपूर्ण
आरम्भ	Aarambha	undertakings	आरम्भों में	आरंभ
परित्यागी	Parityaagee	abandoning / relinquishing	कर्तापन के अभिमान से रहित है	त्यागी (कर्तेपणाच्या अभिमानाने रहित)
गुणातीतः	GuNaateetaH	crossed beyond the qualities	गुणातीत	गुणातीत
सः	SaH	he	वह पुरुष	तो (पुरुष)
उच्यते	Uchyate	is said	कहा जाता है	म्हटला जातो

अन्वय :- (यः) मान - अपमानयोः तुल्यः , मित्र - अरि - पक्षयोः तुल्यः , सर्व - आरम्भ - परित्यागी (च अस्ति) सः गुणातीतः उच्यते ॥ १४ - २५ ॥

English translation:-

Alike in honour and dishonour, alike to friend and foe, relinquishing all undertakings, he is said to have crossed over the qualities (Gunas).

हिन्दी अनुवाद :-

जो पुरुष , मान और अपमान में समान है , मित्र और वैरी के पक्ष में भी समान है , एवं सम्पूर्ण कर्मों के आरम्भों में कर्तापन के अभिमान से रहित है ; वह पुरुष गुणातीत कहा जाता है ।

मराठी भाषान्तर :-

मान – अपमान , मित्रपक्ष व शत्रूपक्ष यांना समान मानणारा व जो सर्व कर्मांच्या फलाचा सर्वप्रकारे त्याग करतो ; त्याला गुणातीत असे म्हणतात .

विनोबांची गीताई :-

मानापमान ज़ो नेणे नेणे ज़ो शत्रु - मित्र हि ।

आरंभ सोडिले ज्यानें तो गुणातीत बोलिला ॥ १४ - २५ ॥

माम् च यः अव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते ।

सः गुणान् सम् - अति - इत्य एतान् ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥ १४ - २६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
माम्	Maam	Me	मुझ को	मला
च	Cha	and	और	आणि
यः	YaH	he who	जो पुरुष	जो (पुरुष)
अव्यभिचारेण	A-VyabhichaareNa	unswerving	अनन्य तथा अव्यभिचारी	अव्यभिचारी एकनिष्ठेने
भक्तियोगेन	Bhaktiyogena	with devotion	भक्तियोग के द्वारा	भक्तियोगाने
सेवते	Sevate	serves	निरन्तर भजता है	भजतो
सः	SaH	he	वह भी	तो
गुणान्	GuNaan	qualities	तीनों गुणों को	गुणांना
सम् - अति - इत्य	Sama – Ati - Itya	crossing beyond	भलीभाँति लाँघकर	चांगल्याप्रकारे ओलांडून
एतान्	Etaan	these	इन	या
ब्रह्मभूयाय	Brahma-Bhooyaaya	for becoming Brahman	सच्चिदानन्दन ब्रह्म को प्राप्त होने के लिये	(सच्चिदानंदघन) ब्रह्म प्राप्त करण्यास
कल्पते	Kalpate	is fit	योग्य बन जाता है	योग्य ठरतो

अन्वय :- यः माम् च अव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते, सः एतान् गुणान् समातीत्य, ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥ १४ - २६ ॥

English translation:-

And he who serves Me with unswerving devotion, he after having crossed the (three Gunas) qualities, is fit for becoming (one with) the Brahman.

हिन्दी अनुवाद :-

और जो पुरुष, अनन्य तथा अव्यभिचारी भक्तियोग के द्वारा, मुझ को निरन्तर भजता है; वह भी इन तीनों गुणों को भलीभाँति लाँघकर, सच्चिदानन्दन ब्रह्म को प्राप्त होने के लिये, योग्य बन जाता है।

मराठी भाषान्तर :-

जो साधक एकनिष्ठ भक्तीयोगाने मला म्हणजे परमेश्वराला भजतो तो तीन्ही गुणांना पार करतो आणि ब्रह्मस्वरूप होण्याला पात्र होतो.

विनोबांची गीताई :-

ज़ो एक निष्ठ भक्तीनें अखंड मज़ सेवितो।
तो ह्या गुणांस लंघूनि शके ब्रह्मत्व आकळूं ॥ १४ - २६ ॥

ब्रह्मणः हि प्रतिष्ठा अहम् अमृतस्य अव्ययस्य च ।

शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्य ऐकान्तिकस्य च ॥ १४ - २७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ब्रह्मणः	BrahmaNaH	of Brahman	परब्रह्म का	परब्रह्माचा
हि	Hi	for	क्योंकि उस	कारण
प्रतिष्ठा	PratiShThaa	the abode	स्त्रोत तथा आश्रय	आश्रय
अहम्	Aham	I	मैं हूँ	मीच आहे
अमृतस्य	Amrutasya	(of) immortal	अमृत का	अमृताचा
अव्ययस्य	Avyayasya	(of) immutable	अविनाशी	अविनाशी
च	Cha	and	और	आणि
शाश्वतस्य	Shaashvatasya	(of) eternal	नित्य	नित्य
च	Cha	and	और	आणि
धर्मस्य	Dharmasya	(of) dharma Being	धर्म का	धर्माचा
सुखस्य	Sukhasya	(of) bliss	आनन्द का	आनंदाचा
ऐकान्तिकस्य	Aikaantikasya	(of) absolute	अखण्ड एकरस	अखंड एकरस
च	Cha	and	तथा	आणि

अन्वय :- अमृतस्य अव्ययस्य च ब्रह्मणः , शाश्वतस्य च धर्मस्य , ऐकान्तिकस्य सुखस्य च हि अहम् प्रतिष्ठा (अस्मि) ॥ १४ - २७ ॥

English translation:-

For I am the abode of Brahman, immortal, immutable, eternal dharma Being and absolute Bliss.

हिन्दी अनुवाद :-

क्योंकि , उस अविनाशी परब्रह्म का और अमृत का तथा नित्य धर्म का और अखण्ड एकरस आनन्द का , स्त्रोत तथा आश्रय मैं हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

अविनाशी व अविकारी ब्रह्माची , शाश्वत धर्माची आणि नित्य सुखाची प्रतिष्ठा म्हणजे अधिष्ठान मीच आहे .

विनोबांची गीताई :-

ब्रह्मास मी चि आधार अवीट अमृतास मी ।
मी चि शाश्वत धर्मास आत्यंतिक सुखास मी ॥ १४ - २७ ॥

ॐ तत् सत् इति श्रीमद् भगवद् गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायाम् योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे गुणत्रयविभागयोगो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥

हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् ।

Om that is real. Thus, in the Upanishad of the glorious Bhagwad Geeta, the knowledge of Brahman, the Supreme, the science of Yoga and the dialogue between Shri Krishna and Arjuna this is the fourteenth discourse designated as "The Yoga of distinction of three Gunaas".

चौदाव्या अध्यायाचा एका श्लोकात मथितार्थ

पार्था मी जनिता तशीच जननी माया जगत् संतती ।
जीवा सत्त्वरजस्तमादि गुण हे स्वाभाविक व्यापिती ॥
जो सेवी परि भक्तिने मज तया हे बाधती ना गुण ।
झाला मत्सम जो प्रियाप्रिय नसे त्याते नुरे मीपण ॥

गीता सुगीता कर्तव्या किम् अन्यैः शास्त्रविस्तरैः ।
या स्वयम् पद्मनाभस्य मुखपद्माद् विनिःसृता ॥

गीता सुगीता करण्याजोगी आहे म्हणजेच गीता उत्तम प्रकारे वाचून तिचा अर्थ आणि भाव अन्तःकरणात साठवणे हे कर्तव्य आहे . स्वतः पद्मनाभ भगवान् श्रीविष्णूंच्या मुखकमलातून गीता प्रगट झाली आहे . मग इतर शास्त्रांच्या फाफटपसाऱ्याची जरूरच काय ?

- श्री महर्षी व्यास

विनोबांची गीताई :-

गीताई माउली माझी तिचा मी बाळ नेणता ।
पडतां रडतां घेई उचलूनि कडेवरी ॥